Dainik Bhaskar (Indore), 6th September 2024, Front Page- Plus 04

भास्कर खास • आईआईटी इंदौर के प्रोफेसर राष्ट्रीय टीचर पुरस्कार से सम्मानित, 11 साल से मशीन लर्निंग व मैथ्स पढ़ा रहे, सम्मान पर बोले-

टॉपिक टुकड़ों में पढ़ाएं, बच्चों से ही फीडबैक लें तो जटिल विषय भी होगा आसान

सौदामिनी ठाकुर | इंदौर

'कोई भी विषय पढ़ाने से पहले जरूरी है, बच्चों का दिमाग पढ़ें। टॉपिक अगर जटिल है तो कोशिश करें कि उसे छोटे-छोटे हिस्सों में पढ़ाएं। बेहतर होगा, हम जो कुछ भी पढ़ा रहे हैं, बच्चों से ही उसका फीडबैक भी लें। यकीन मानिए, अगर इस फॉर्मूले पर चलें तो कठिन से कठिन विषय भी आसानी से समझा सकते हैं।'

यह कहना है, आईआईटी इंदौर के प्रोफेसर कपिल आहूजा का। प्रो. आहूजा को शिक्षक दिवस पर गुरुवार को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने राष्ट्रीय टीचर पुरस्कार से सम्मानित किया। अपना यह सम्मान बच्चों को समर्पित करते हुए उन्होंने कहा, 11 साल से आईआईटी में मशीन लर्निंग और मैथ्स पढ़ा रहा हूं। हमेशा यही कोशिश रही कि क्लास के सौ फीसदी बच्चे सब्जेक्ट को अच्छे से समझें और सीखें। सफलता का भी यही फॉर्मूला है। प्रो. आहूजा 3 साल वर्जीनिया टेक में पीएचडी के दौरान पढ़ा चुके हैं। उन्होंने ही आईआईटी इंदौर में पहला एमएस रिसर्च का कोर्स शुरू किया।

Q. मशीन लर्निंग और मैथ्स जैसे कठिन विषय बच्चों को कैसे आसानी से समझा देते हैं, शिक्षक होने पर कैसा महसूस करते हैं ?

A. कभी सोचा नहीं था कि शिक्षक बनूंगा। लगातार 5 साल से बेस्ट टीचर का अवॉर्ड आईआईटी से मिल रहा है। लगता है जैसे कोई सुपर पॉवर है, जिससे बच्चों का दिमाग पढ़ने में मदद मिल रही हो। बच्चा कहां अटक रहा है, यह अपने आप पता चल जाता है। मेरे पढ़ाने के बाद कठिन विषय भी बच्चा समझ लेता है, तो लगता है जैसे मैंने दुनिया जीत ली हो।

Q. टीचिंग का जुनून कब जागा, साथी शिक्षकों के लिए कोई संदेश?

A. टीचिंग का जुनून वर्जीनिया टेक यूनिवर्सिटी से पीएचडी करते समय जागा। वहां बच्चों को पढ़ाते हुए मैंने महसूस किया कि बेहद सहजता से कठिन कंसेप्ट को टुकड़ों में तोड़कर उसे आसान बना सकते हैं। स्टूडेंट्स के लिखित फीडबैक लेने और उसके अनुसार खुद में बदलाव करने की कला हो तो पढ़ाई के साथ-साथ बच्चों का दिल जीतना आसान है।

Q. एवरेज और ब्रिलियंट- दोनों तरह के स्टूडेंट का साथ पढ़ाना कैसी चुनौती है?

A. क्लास में सभी तरह के बच्चों को साथ लेकर चलना पड़ता है। जो फास्ट लर्नर है, उनके लिए रोचक प्रश्न और चुनौतियां देते हैं वहीं जो धीमे पढ़ते हैं उन पर खास ध्यान देकर विषय को अच्छे से समझाते हैं। इसके बाद ही कोर्स आगे बढ़ता है वरना नहीं।

Q. पढ़ाई को आसान बनाने के लिए और क्या-क्या टिप्स अपनाते हैं?

A. मेरी क्लास की खास बात ये है कि छात्रों को हर वक्त पता होता है कि वो क्या पढ़ रहे हैं, क्यों पढ़ रहे हैं, ये उनके कैसे काम आएगा और क्यों जरूरी है। छात्रों को हर क्लास के नोट्स पीडीएफ फॉर्मेट में, लेक्चर का वीडियो, ट्यूटोरियल आदि सब कुछ गूगल ड्राइव पर मिल जाते हैं।

Q. वर्जीनिया टेक में पीएचडी के दौरान पढ़ा चुके, यहां और वहां क्या फर्क देखते हैं?

A. भारत और यूएसए के पढ़ाने के तौर तरीकों में बड़ा अंतर है। अमेरिका में छात्र होमवर्क में या परीक्षा में बिलकुल चीटिंग नहीं कर सकते। अगर होमवर्क में भी किसी साथी का लिखा कोड चुराया तो स्टूडेंट को कमेटी के सामने पेश किया जाता है। कमेटी चीटिंग करने वाले छात्र को निष्कासित भी कर सकती है। भारत में ऐसा नहीं है। इसीलिए मैं होमवर्क को ग्रेड नहीं करता। इसके स्थान पर क्लास में क्विज के माध्यम से स्टूडेंट्स की समझ को परखता हूं।